शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी में शोध की प्रक्रिया और तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व

गीतांजली साहू (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू युनिवर्सिटी
हैदराबाद, आँध्रप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शोध कार्य में तुलनात्मक अध्ययन समकालीन समय की माँग है। यह मांग भाषा और साहित्य के क्षेत्र में और भी महत्वपूर्ण है। भारत विविधताओं का देश है। यहाँ की विविध भाषाओं में उत्कृष्ट साहित्य की रचना हुई है। इन भाषाओं के साहित्य का अवगाहन करने पर एक ही प्रकार की अन्तश्चेतना के दर्शन होते हैं, जो आश्चर्यचकित कर देता है। दूसरी और वैचारिक भिन्नता को भी पूरा-पूरा अवसर मिला है। आज की परिस्थिति में भाषा और साहित्य में समता और वैषम्य में से आगे जाकर तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता प्रत्येक स्तर पर महसूस की जा रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोध की प्रक्रिया और तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

तुलनात्मक अध्ययन के सम्बन्ध में डॉ. चंद्रभानु सोनवणे कहते हैं, "हिंदी भाषा के राष्ट्र भाषा या संपर्क भाषा के नाते अध्ययन और अध्यापन के साथ तुलनात्मक शोध की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।"1 इस बात में वे हिंदी को भारत की राजभाषा एवं संपर्क भाषा होने के नाते तुलनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हैं। इसके अलावा भारत देश की बहुभाषिकता भी एक बड़ा कारण है। अनुसंधान और तुलनात्मक अध्ययन में भी कुछ भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। अनुसंधान की प्रक्रिया में तुलनात्मक विधान की भी सहायता ली जाती है और तुलनात्मक अध्ययन में भी गंभीर अन्वेषण, परीक्षण और निष्कर्ष आदि साहित्यिक आलोचना एवं अनुसंधान की प्रक्रिया से लाभ उठाया जाता है, तुलनात्मक अध्ययन अनुसंधान की अपेक्षा आलोचना के ही निकट पड़ता है। वास्तव में तुलनात्मक अध्ययन का उत्तरदायित्व आलोचना एवं अनुसंधान से भी महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार शोध की प्रकृति सिर्फ विषयनिष्ठ ही नहीं होती, बल्कि विषय को प्रभावित करने वाले ज्ञान के क्षेत्रों से जुड़ी होती है। तुलनात्मक अध्ययन से उत्पन्न शोध की प्रवृत्ति में शोधक व्यक्ति एक क्षेत्र विषय या रचनाकार से अधिक निकटता का अनुभव कर सकता है।

तुलनात्मक शोध के आयाम

तुलनात्मक शोध कार्य करते समय सिर्फ तुलना ही नहीं करनी होती है, बल्कि समानता के स्वरूपों को स्पष्ट करते हुए उनके मूल स्रोतों को भी खोजना जरुरी होता है। इसके चलते असमानता पर भी ध्यान देना जरूरी होता है। तुलनात्मक अध्ययन आम तौर पर विभिन्न भाषाओं में और एक ही भाषा के विविध अनुशासनों में किया जा सकता है। इस तरह से तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित शोध मात्र साम्य-वैषम्य प्रकट करने वाली तुलना भर नहीं

है। यह तो ज्ञान विशेष को पृष्ठभूमि प्रदान करने वाली सामूहिक प्रवृत्ति के संधान द्वारा मानवीय कार्य-कलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्परिक संबंध से अवगत भी करती है।

तुलनात्मक अध्ययन में सामग्री और उसके विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्ष ही तुलनात्मक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तुलनात्मक अध्ययन में सामग्री वास्तव में ऐतिहासिक दस्तावेज के रुप में होती है जिसमें तथ्य युग सापेक्ष धारा से बद्ध होते हैं। उनका विश्लेषण कर अपने समय के समाज का सामाजिक दर्शन प्राप्त कर सकते हैं। जो सामग्री हमें विभिन्न माध्यमों से प्राप्त होती है, वह विभिन्न ज्ञानानुशासनों से जुड़ी होती है, इसलिए तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित शोध में सामग्री विश्लेषण का महत्व बढ़ जाता है। विश्लेषण की व्याख्या देते हुए 'होलेस्टी' ने कहा है, "The content analysis is the application of scientific methods to documentary evidence."2 तुलनात्मक अध्ययन में प्रवृत्त अनुसंधान को निम्नलिखित विषयों पर ध्यान देना चाहिये :-

1 अनुसंधाता का दोनों आलोच्य साहित्यों और उनकी भाषाओं का अच्छा ज्ञान होना चाहिये।

2 दोनों साहित्यों को अध्ययन प्रस्तुत करते समय किसी एक साहित्य के प्रति अधिक आदर या पक्षपात की दृष्टि नहीं रखनी चाहिये। उसका विवेचन पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिये। अनुसंधाता को सदा सतर्क एवं निर्लिप्त होने के साथ-साथ अध्ययन की मार्मिकता एवं गहनता का परिचय देना चाहिये।

3 जहाँ तक हो सके, अनुसंधाता को विषय की तुलना सभी दृष्टियों से करनी चाहिये। तुलना के लिए साहित्य के मूलभूत तत्वों पर आधारित रहना अधिक श्रेयस्कर है जिससे दोनों साहित्यों की एकरुपता या भेदकता स्पष्ट हो जाये।

4 जहाँ तक हो सके अनुसंधाता को मुख्य भाषा में अन्य साहित्य के उद्धरणों को अनूदित करके रखना अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इसके द्वारा मनुष्य भाषा-भाषी संसार को अन्य साहित्यों को समग्र रूप से समझने में सुविधा होगी।

तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित शोध को शोध से अधिक आलोचना माना जाना चाहिये, क्योंकि तुलनात्मक शोध में मूल्यांकनपरक दृष्टि के बिना आलोचनात्मक चेतना संभव नहीं है। अंग्रेजी के कवि समीक्षक टी.एस. इलियट ने भी स्वीकार किया है कि आलोचना का मुख्य अस्त्र तुलना और विश्लेषण होता है। जो बातें सामान्य अध्ययन में सहज ही उभर कर सामने नहीं आ पाती है, उन बातों को तुलनात्मक अध्ययन सहज ही आलोचक के सम्मुख ले आता है। इसे तुलनात्मक अध्ययन की विशेषता और सफलता मानी गयी है। तुलनात्मक अध्ययन से जितनी अधिक समानताओं और विषमताओं के तत्व उभर कर सामने आयेंगे, अध्ययन को उतना ही अधिक गहन और सफल माना जाता है। अतः तुलनात्मक अध्ययन साहित्य की संपूर्ण एवं सूक्ष्म समझ के साथ ज्ञान के मौलिक गुणवत्ता विकसित करने में सहायक है। रेने वेलके के अनुसार, "तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक आलोचना का प्रयोग बहुत ही आवश्यक है, नहीं तो इस अध्ययन का अर्थ साहित्येतिहास के विभिन्न तथ्यों का आकलन रह जाता है। यद्यपि इतिहास के विभिन्न तथ्यों का चयन भी अपने आप में एक आलोचनात्मक कार्य है।"3

तुलनात्मक साहित्य की तरह तुलनात्मक समीक्षा में क्षमता भी अपना विशिष्ट स्तर है। "साहित्य-

समीक्षा का किसी कृति के कलात्मक उत्कर्ष की खोज तथा रसात्मक बोध का प्रयत्न कहा जा सकता है। भारतीय साहित्य के संदर्भ में साहित्य-समीक्षा के आलोक स्तम्भ है भरत, दंडी, आनंदवर्द्धन, कुंतक और अभिनवगुप्त।"4 काव्य शास्त्रीय विवेचन वैसे अन्य ग्रंथों में भी किया गया है, मात्र इस क्षेत्र पर प्रभुत्व इन्हीं आचार्यों का रहा है। रस, अलंकार, रीति,ध्वनि और वक्रोक्ति काव्य समीक्षा के मेरूदंड रहा है। तुलनात्मक समीक्षा के द्वारा हम साहित्य की संश्लिष्टता की सूक्ष्म समझ अवश्य उत्पन्न कर सकते हैं। तुलनात्मक अध्ययन में जब हम आलोचनात्मक दृष्टि डाल रहे होते हैं तो वह दृष्टि किसी खास विचारधारा में नहीं होती बल्कि एक पद्धति में होती है। इसलिए आलोचनात्मक धारा नहीं बल्कि आलोचनात्मक पद्धति तुलनात्मक अध्ययन में आलोचना के लिए उपयुक्त शब्द होता है।

तुलनात्मक अध्ययन में अनुवाद की स्थिति काफी महत्वपूर्ण है। पहला कारण सीधा-सीधा यह है कि भारत में बहुत सारी भाषा बोली जाती है जिसमें बहुत सारे साहित्य का निर्माण होता है। "एक साहित्य के रूप में भारतीय साहित्य की अवधारणा का निर्माण तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के आश्रय से ही पूरा किया जा सकता है।"5 इस बात के पीछे यह धारणा जुड़ी है कि एक व्यक्ति सारी भाषाएँ नहीं सीख सकता इसलिए अनुवाद के माध्यम से ज्ञान के विभिन्न स्रोतों तक पहुँचा जा सकता है। इस प्रकार तुलनात्मक शोध में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद की परंपरा अति प्राचीन है। एक भाषा की श्रेष्ठ कृति का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। अनुवाद का यह कार्य व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों ही स्तरों पर हुआ है और आज भी हो रहा है। इसके अतिरिक्त भारतीय भाषाओं का, विशेष रुप से हिंदी का, बहुत सारा साहित्य अंग्रेजी में भी अनूदित है। मूल पाठ और अनूदित पाठ की तुलना को पिछले कुछ वर्षों में काफी प्रसार मिला है। मूल पाठ के आधार पर अनूदित पाठ की तुलना करते हुए दोनों भाषाओं की शक्ति और सीमा को रेखांकित कर पाना भी संभव होता है तथा अनुवाद प्रक्रिया की सीमा भी उद्घाटित हो जाती है। दो भाषाओं में भाषिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर निहित भेदों का विवेचन भी इस प्रकार की तुलना से किया जा सकता है।

अतः भाषा संस्कृति का वहन नहीं करती वह उसका धारण करती है। भाषा बहता नीर है। यह परिवर्तनशील है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भाषा का अनुवाद अत्यंत आवश्यक है। इंद्रनाथ चौधरी के शब्दों में, "comparative perspective looks at all literature as one organic process, a continuous and cumulative whole, that being the reason one can hope that the comparative method can be helpful in cross-culture communication in translation."6 अनुवाद के माध्यम से साहित्य विकसित भी होता है। मूल भाषा से अनुवाद पुनःसृजन होता है। तुलना करने का अर्थ अनुवाद प्रस्तुत कर देना नहीं है। उसके मर्म, आदर्श तथा महत्व को उपलब्ध करते हुए नये सामाजिक परिवेश में उसकी विशेषताएँ प्रतिष्ठित करना होता है। तुलनात्मक साहित्य को विवादास्पद मुद्दों से बचाये रखने के लिए मूल ग्रन्थ के महत्व को स्वीकार करना जरुरी होता है। जिससे स्वार्थपरता से दूर रहकर कार्य होता है। विषय के विश्लेषण से प्राप्त स्थूल सत्य से

सूक्ष्मतर सत्य तक पहुँचा जा सकता है। अतः कार्य अत्यंत विचारशील होती है।

"इस देश के विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक साहित्य का सम्यक विकास करने के लिए यह आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य है कि उसका अध्ययन अध्यापन मूलतः भारतीय संदर्भ में किया जाए। इसके लिए पहली आवश्यकता यह है कि यहाँ के पाठ्यक्रमों में भारतीय साहित्यका अनुपात अधिक होना चाहिए।"7 भारतीय संस्कृति ने वास्तव में सभी भाषाओं के साहित्य पर अनेक प्रभाव डाला है। साहित्य आनंद के साथ अनुभूति भी प्रदान करता है। इसके क्षेत्र में व्यापकता लाने के लिए किसी एक भाषा के साथ दूसरी भाषा के साहित्य की तुलना उपेक्षित है। इससे आलोच्य साहित्यद्वय में होनेवाले साम्य एवं वैषम्य निरूपित होते हैं। किसी अंचल विशेष के धर्म, आचार-विचार, चाल-चलन, शिक्षा-दिक्षा, आस्था-विश्वास, व्यापार-वाणिज्य तथा मूलभूत आदि के बारे में भी अध्ययन प्रस्तुत किया जा सकता है। इस अध्ययन से दोनों भाषा के साहित्य में सादृश्य, वैषम्य तथा विशेषताएँ भी सहज रूप से स्पष्ट हो जाता है। शोधार्थी अपने भाषा साहित्य की उन्नति के साथ तुलनीय साहित्य की विशेषताओं के बारे में अध्ययन कर सकता है। इन्हीं कारणों से तुलनात्मक अध्ययन सामाजिक आवश्यकता है।

विभिन्न भाषाओं के धर्म तथा विचारधाराओं के पारंपरिक संबंध पर ध्यान केंद्रित होने से ही तुलनात्मक साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण बन गयी है। विभिन्न प्रांतों के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आदि साम्य-वैषम्य को लोगों की जीवन शैली तथा भाषाओं के स्वरूप उद्घाटन हेतु तुलनात्मक साहित्य की आवश्यकता पायी जाती है। किसी भाषा विशेष के दो रचयिताओं के साहित्य का भी तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। साहित्यिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु साहित्य की विशेष भूमिका है। जैसे- वाल्मीकि के साथ होमर, कालिदास के साथ भर्जिल, सोफोक्लिस के साथ शेक्सपियर के साहित्य की तुलना तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत है।

किसी भी कवि या लेखक की रचना का स्वतंत्र मूल्यांकन संभव नहीं है क्योंकि वह अपने काल अथवा अपनी परंपरा से अलग नहीं रह सकता, इसलिए उसके पूर्ववर्ती, समकालीन एवं परवर्ती कवियों से उसकी तुलना करना आवश्यक है। विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों की तुलना से उस समय के उन भाषाओं की सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन लोकभाषा एवं लोकसाहित्य की आधुनिक साहित्य में तुलना करते समय उसके भाषा वैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय तथा मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर भी विचार किया जाता है। अतः तुलनात्मक साहित्य में आलोचना किसी समय, लेखक अथवा रचना तक सीमित नहीं रहती। इसी अध्ययन से राष्ट्र का विकास होता है। इससे सामाजिक मूल्यबोध तथा मनुष्य के गौरव की पुनःप्रतिष्ठा होती है।

"भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता पहले उत्पन्न हुई। राष्ट्रीयता बाद को जन्मी है।'8 भारतीय साहित्यों के बीच तुलनात्मक अध्ययन इसलिए ओर भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है कि, अनादि काल से भारतवर्ष में एक ही विचारधारा का, एक ही जीवन दर्शन का, एक ही महान आदर्श का प्रचार और प्रसार रहा है। सामान्यतः विशाल संस्कृत भाषा तथा साहित्य का प्रभाव सभी साहित्य पर पाया जाता है। भारतीय दर्शन तथा उसके आध्यात्मिक दृष्टिकोण का प्रभाव सभी साहित्यों पर न्यूनाधिक मात्रा में पाया जाता

है। जिस प्रकार पुष्पों के अपने पृथक रुप रंग के होते हुए भी उनमें एक ही रस का, एक ही मधु का, एक ही सुगंध का अस्तित्व है, उसी प्रकार विभिन्न प्रादेशिक साहित्यों के बाह्य रुप रंगों में भिन्नता और आंतरिक चेतना की समानता दिखाई देती है। इसी तरह प्रादेशिक साहित्य, भारतीय साहित्य के उपवन में अपने बाह्य रूप रंगों के वैविध्य से उसकी विशालता और आंतरिक समानता से उसकी अखण्डता का उद्घाटन कर उसके समग्र सौंदर्य को द्विगुणीकृत करते हैं। अतः भारतीय साहित्य के समग्र स्वरूप का आकलन करने के लिए पहले उसके विभिन्न प्रादेशिक साहित्यों के बीच तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।

निष्कर्ष

भारत के नये सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के प्रति अभिरुचि बढ़ रही है। विभिन्न जाति, धर्म, शिक्षा, संप्रदाय, विचारधारा, भाषा, राजनीति एवं जीवनशैलियों के आधार पर भारत विभाजित है। इसी विशाल भारत में भावगत एकता की प्रतिष्ठा के लिए तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के लिए तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन सहायक होने में समर्थ है। भाषा एवं साहित्य को केंद्र में रखकर भारत की सांस्कृतिक एकता की रक्षा की जा सकती है। केवल सांस्कृतिक नहीं, भाषागत तथा मनोवैज्ञानिक एकता के प्रतिष्ठा हेतु तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः यह साहित्य भाषा साहित्य के महत्व को विकास करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप और समस्याएँ - भ.ह. राजूकर, डॉ. राजमोल बोरा, पृष्ठ 27

2 तुलनात्मक अध्ययन स्वरुप और समस्याएँ भ.ह. राजूस्कर, डॉ. राजमल बोरा, पृष्ठ 27

3 तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य-इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ 67

4 नगेंद्र, तुलनात्मक साहित्य, पृष्ठ 71

5 तुलनात्मक साहित्य की भूमिका - इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ 81

6 Indranath choudhury, comparative indian literature-p.no -102

7 नगेंद्र, तुलनात्मक साहित्य, पृष्ठ 98

8 संस्कृति के चार अध्याय-डॉ. रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ 498